International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 22-24

प्रेमचंद और श्री लंका के कहानीकार मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में अंतर्गत प्रतीकात्मकता और वर्णनात्मकता

डॉ० आर०के०डी० निलंति कुमारी राजपक्ष
ज्येष्ठ व्याख्याता, भाषा, संस्कृति एवं रंग कला अध्ययन विभाग, श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, गंगोडविल, नुगेगॉड, श्री लंका।

सारांश
भारत के प्रख्यात कहानीकार प्रेमचन्द का समय सन् 1880 से सन् 1936 तक और श्री लंका के प्रमुख कहानीकार मार्टिन विक्रमसिंह का समय सन् 1890 से सन् 1976 तक है। दोनों साहित्यकार अलग–अलग देशों से हैं फिर भी उनकी कहानियों में बहुत सी समानताएँ पाई जाती हैं। समकालीन होने के नाते दोनों कहानीकारों की विषयवस्तु पर तत्कालीन समस्याओं का प्रभाव पड़ा है।
प्रेमचन्द तथा मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में वर्णनात्मकता और प्रतीकात्मकता का प्रयोग मिलता है।

मूल शब्द : प्रेमचंद, मार्टिन विक्रमसिंह, कहानी, प्रतीकात्मकता और वर्णनात्मकता।

प्रस्तावना

प्रेमचन्द की कहानियों में प्रतीकात्मकता का प्रयोग।

कोई भी साहित्यकार अपनी रचनाओं को सशक्त बनाने के लिए षिल्पों का प्रयोग करता है। प्रतीकों का प्रयोग इनमें से एक है। प्रतीकों के प्रयोग से भाषा में सुंदरता आ जाती है। किसी वस्तु या पात्र की मूर्त पहचान करने की बजाय उसको प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तु प्रतीक है। प्रेमचन्द ने भी अपनी कहानियों में प्रतीकों का प्रयोग किया है। उनकी कई कहानियों में शीर्षक ही प्रतीक है। जैसे 'पूस की रात', 'कफन', 'फातिहा', 'इस्तीफा' आदि।

'पूस की रात' कहानी में अपने खेत में हल्कू को घोर ठंड सहने के लिए कोशिश करते हुए देख सकते हैं। पूरी कहानी जाड़े की रात से संबंधित है। 'कफन' कहानी कफन खरीदने से संबंधित है। 'कफन', माधव, बुधिया और घीसू के जीवन के दुःखों का प्रतीक है। 'धिक्कार' कहानी भी प्रेमचन्द की एक प्रसिद्ध कहानी है। इसमें भी प्रेमचन्द ने प्रतीकों का प्रयोग किया है। इसमें मानी के मन में अचानक अपनी मरी हुई माताजी का चेहरा याद आना मानी की आने वाली मृत्यु का प्रतीक है। 'फातिहा' कहानी में असद खाँ ने एक अफ्रीदी को मारा। लेकिन असद खाँ के रोएं खड़े हो गये। यह इस कहानी में एक संकेत है। कहानी में आगे जाकर पता चला कि वह बुढ्ढा जो असद खाँ के हाथ से मारा गया उसके ही पिताजी थे। इस प्रकार प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में प्रतीकों का प्रयोग सफल ढंग से किया है।

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में प्रयुक्त संकेत

गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में विद्यमान है। इसके लिए उन्होंने संकेतों का प्रयोग किया है। संकेत कहानी को संक्षिप्त और सारगर्भित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

श्री लंका के समाज की जमींदारी प्रथा को समाप्त करके धीरे–धीरे व्यवसायी अर्थ–प्रथा की स्थापना के युग के अनुभव प्राप्त मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में भी वे प्रवृत्तियाँ विषयवस्तु के रूप में दिखाई देती हैं। साथ ही साथ सिंहली संस्कृति को भूले हुए और अंग्रेजी प्रथाओं को अपनाने वाले सिंहली लोगों पर उन्होंने तीखा व्यंग भी किया है। उदाहरण के रूप में 'कॅर्दिंरि गै मलकदँ' कहानी में डिरॅक्स नामक एक विदेशी के अंत में भिखारी बन जाने की स्थिति को दिखाते हुए यह संकेत किया है कि अपने देश में रहने वाले व्यक्ति को जो स्वाभिमान प्राप्त होता है वह विदेश में प्राप्त होना असंभव–सा है। साथ ही साथ 'मुदियान्से मामा' कहानी के आरंभ से ही एक खण्डहर जैसे घर का चित्रण संकेतपूर्ण भाषा का द्योतक है।

'छोटी पहाड़ी पर पड़ा मिट्टी का ढेर जैसा एक बड़ा घर है। जिसकी दीवारों की बाहरी तरफ ही नहीं अंदर भी फफूँदी तथा दाग अधिकाधिक दिखाई देते हैं।'[1]

इस घर का वर्णन इस बात का संकेत है कि बुजुर्ग कलुतर हामिने विभिन्न रूढ़ियों को मानते हुए चलने वाली स्त्री है और उसकी आर्थिक दशा का पतन भी इसके कारण ही हुआ है।

मुदियान्से मामा के इन्तज़ार में रहने वाली मालनी के मन की उत्सुकता का संकेत मार्टिन विक्रमसिंह ने निम्नप्रकार किया है।

'एक बड़े पेड़ की डाल पर पड़ा हुआ असबाब जैसे घोंसले पर पड़े हुए चातक के बच्चे माँ के खिलाने तक अधीर होकर चिल्लाते हैं।'[2]

'मामगे दुव' कहानी में मामा के परिवार के लोगों द्वारा पुरानी बातों को भूलकर नूतनता को अपनाकर उन्नति के पथ पर अग्रसर होने की प्रवृत्ति की ओर मार्टिन विक्रमसिंह ने निम्नप्रकार संकेत किया–

'पुराने घर को तुड़वाकर एक नया घर बनवाया गया।'[3]

इस प्रकार अपनी रचना को आकर्षक तथा संक्षिप्त बनाने के लिए दोनों कहानीकारों ने संकेतों का कुषल प्रयोग किया है।

प्रेमचंद की की कहानियों की वर्णनात्मकता

प्रेमचन्द ने वर्णनात्मक भाषा शैली का प्रयोग करते हुए अपनी कहानियों को सशक्त बनाया है। वर्णनात्मकता से कहानी में किसी घटना या पात्र विशेष का रूप विस्तार ग्रहण करता है। प्रेमचन्द ने कहानी 'सुजान भगत' में सुजान भगत का चरित्र इस प्रकार वर्णित किया है। 'सुजान महतो सुजान भगत हो गये। भगतों के आचार–विचार कुछ और होते हैं। वह बिना स्नाान किये कुछ नहीं खाता। गंगाजी अगर घर से दूर हो और वह रोज स्नान करके दुपहर तक घर न लौट सकता हो, तो पर्वों के दिन तो उसे अवश्य

[1] मार्टिन विक्रमसिंह, हदँ साक्कि कीम, (मुदियान्से मामा) 2012 पृ. 50
[2] वही, पृ. 54
[3] मार्टिन विक्रमसिंह, मगे कताव, (मामगे दुव) 2012 पृ. 17

ही नहाना चाहिए। भजन–भाव उसके घर अवश्य होना चाहिए। पूजा–अर्चना उसके लिए अनिवार्य है। खान–पान में भी उसे बहुत विचार रखना पड़ता है। सबसे बड़ी बात यह है कि झूठ का त्याग करना पड़ता है। भगत झूठ नहीं बोल सकता। साधारण मनुष्य को अगर झूठ का दंड एक मिले, तो भगत का एक लाख से कम नहीं मिल सकता।..... सुजान को भी अब भगतों की मर्यादा को निभाना पड़ा।'[4]

'धिक्कार' कहानी में प्रेमचन्द ने विधवा मानी का चरित्र चित्रण वर्णनात्मक शैली में किया। 'अनाथ और विधवा मानी के लिए जीवन में अब रोने के सिवा दूसरा अवलंब न था। वह पाँच ही वर्ष की थी जब पिता का देहांत हो गया। माता ने किसी तरह उसका पालन किया। सोलह वर्ष की अवस्था में महल्लो की मदद से उसका विवाह भी हो गया, पर साल के अंदर ही माता और पति दोनों विदा हो गये। इस विपत्ति में उसे अपने चाचा वंशीधर के सिवा और कोई ऐसा नज़र न आया जो उसे आश्रय देता।..... वह गाली, झिड़की, मारपीट सब सह लेगी, कोई उस पर संदेह तो न करेगा, उस पर मिथ्या लांछन तो न लगेगा, शहरों और लुच्चों से उसकी रक्षा होगी।'[5]

'मंत्र–1' कहानी में भी प्रेमचन्द ने वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग किया है। इसी वर्णन से कथा नायक पंडित लीलाधर चौबे के चरित्र का स्वरूप पाठकों तक पहुँचा देता है। नीचे उदाहरण से यह बात स्पष्ट होती है। ' पंडित लीलाधर चौबे की जबान में जादू था। जिस वक्त वह मंच पर खड़े होकर अपनी वाणी की सुधावृष्टि करने लगते थे, श्रोताओं की आत्माएँ तृप्त हो जाती थीं, लोगों पर अनुराग का नशा छा जाता था। चौबेजी के व्याख्यानों में तत्व तो बहुत कम होता था, शब्द योजना भी बहुत सुंदर न होती थी, लेकिन बार–बार दुहराने पर भी उसका असर कम न होता, बल्कि घन की चोटों की भाँति और भी प्रभावोत्पादक हो जाता था। हमें तो विश्वास नहीं आता, किंतु सुनने वाले कहते हैं जिन्होंने केवल एक व्याख्यान रट रखा है और उसी को वह शब्दषः प्रत्येक सभा में एक नये अंदाज से दुहराया करते हैं। जातीक गौरव–गान उनके व्याख्यानों का प्रधान गुण था मंच पर आते ही भारत के प्राचीन गौरव और पूर्वजों की अमरकीर्ति का राग छेड़कर सभा को मुग्ध कर देते थे।'[6]

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों की वर्णनात्मकता

वर्णनात्मक शैली मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों की प्रमुख विशेषता है। वर्णन से कहानी लंबी हो सकती है लेकिन विक्रमसिंह ने कहानी को प्रभावशाली बनाने में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग कुशलतापूर्वक किया है। जैसे–

'उपालिस तड़के में उठकर हदँया (सांड़) अपने तांगे पर बाँधकर पॉलऑय पुल के पास जाता है। गाल्ल की अदालत का दूसरे कार्य में जाने वाले तीन सवारी ताँगे पर बिठाकर वह सुबह नौ बजने से पहले बाजार में पहुँचता है। वह बाजार का पुल इसलिए पार नहीं करता है कि उसके पास अपने ताँगे को शहर में प्रवेश करने का अनुमति पत्र नहीं है। इस तरह का अनुमति पत्र पाने के लिए ज्यादा रुपए खर्च करने पड़ते हैं। ऐसा अनुमति पत्र सुबह से शाम तक किराए के लिए ताँगे चलाने वाले लोगों के लिए ठीक है, उपालिस के लिए नहीं।'[7]

'वहल्लु' कहानी में दूसरे स्थल पर भी वर्णनात्मक शैली निम्नप्रकार मिलती है। 'अपने पैरो से न चल सकने वाला व्यनक्ति की तरह उपालिस पलंग पर लेट गया। उसे वह दिन याद आया जिस दिन वह अपनी मृत्यु से बच गया। आठ महीने पहले एक दिन जब वह कडवत की ओर ताँगा चला रहा था तब फिसलकर तांगे से गिर पड़ा। अगर उसी वक्त ताँगा पत्थर जैसा न रुका होता तो वह ताँगा उसकी छाती से होकर गुजरता।'[8]

'आदरय' कहानी के निम्नलिखित गद्यांश से उनकी वर्णनात्मगक शैली भली–भाँति प्रकट होती है। 'जब मेरा उसके घर में प्रवेश हुआ तब मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। उसकी शादी धनवान युवक से हुई। इसलिए उसका घर बहुत ही सुंदर दिखा, नए–नए सोफा सेट, महंगे मखमली कालीन, दीवारों के रंग के उचित पर्दे आदि से घर के अन्दर की शोभा का बढ़ जाना गँवार होने पर भी मुझे आश्चर्यजनक नहीं हुआ।'[9]

'उसके घर के अन्दर की सुंदरता को देखकर मेरा अंतर्मन मेरी परीक्षा करने लगा। मेरी आँखे अपने कपड़ों की ओर खिचीं। लाल जूतों के लिए अनुचित नीले रंग की कमीज और पतलून की ओर अपनी निगाह पड़ने लगी।'[10]

इस प्रकार 'आदरय' कहानी में विमला के घर के प्रवेश लेने वाले सिरिमल को किस प्रकार उसके घर की सुंदरता दिखाई देती है, वह वर्णन अत्यंत चमत्कारपूर्ण है। साथ ही साथ 'मामगे दुव' कहानी भी उनकी वर्णनात्मक शैली की द्योतक है।

'उनका सुंदर छोटा घर और आँगन के फूल की फुलवारी देखने पर मुझ गँवार को आश्चरर्य हुआ। सपाट तरीके से कटी हुई झाड़ियाँ मुझे फूलों के गुच्छे जैसे दिखाई देने लगे। गुलाब से निकली हुई सुगंध ने मेरे मन को आनंदित किया और हमारे प्यार की भी याद दिलाई।'[11]

इस प्रकार विक्रमसिंह ने अपनी ममेरी बहन के घर को देखकर सॉमी के मन में उत्पन्न विचारों को वर्णनात्मकक शैली के आधार पर प्रकट किया है।

'हॉरा ऍल्लीम' कहानी में सिरिमल बन्डार की आँगन की सुंदरता का वर्णन उनकी वर्णनात्मक शैली का सजीव उदाहरण है।

'घर के आँगन में कद्दू की लता से छत का आधा भाग ढका हुआ था। दीवार के एक कोने से उगी हुई तुरई की लता पर लदे हुए तुरई के छोटे–बड़े फल लटकते हुए झुमके जैसे हैं। बैंगन की पत्तियों की छाया पाकर लदे हुए बैंगन के फल आँगन में नई आभा लाए। सपाट ढंग से कटी हुई झाड़ियाँ सब्जियों की सुरक्षा के लिए बनी हुई दीवारें जैसी हैं।'[12]

इस प्रकार प्रेमचंद और मार्टिन विक्रमसिंह ने अपनी कहानियों के चरित्रों की विषेषताओं से; किसी मानसिक या प्राकृतिक वातावरण से पाठकों को अवगत कराने में वर्णनात्मक शैली का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अपनी रचना को आकर्षक तथा संक्षिप्त बनाने के लिए दोनों कहानीकारों ने संकेतों का
कुषल प्रयोग किया है फिर भी अपनी कहानियों के चरित्रों की विषेषताओं से तथा किसी मानसिक या प्राकृतिक वातावरण से पाठकों को अवगत कराने में दानों कहानीकारों ने वर्णनात्मक शैली

[4] रवीन्द्र कालिया, संपादक, प्रेमचंदः किसान जीवन संबंधी कहानियाँ (सुजान भगत), 2012, पृ. 36

[5] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ (धिक्कार), 2008, पृ. 130

[6] रवीन्द्र कालिया, संपादक, प्रेमचंदः हिंदू–मुस्लिम एकता संबंधी कहानियाँ (मंत्र–1), 2012, पृ. 143

[7] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (वहल्लु) 2012 पृ. 105

[8] वही, पृ. 107

[9] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (आदरय) 2012 पृ. 115

[10] वही, पृ. 115

[11] मार्टिन विक्रमसिंह, मगे कताव, (मामगे दुव) 2012 पृ. 206

[12] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (हॉरा ऍल्लीम) 2012 पृ. 242

का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।

संदर्भ

1. कालिया, रवीन्द्र.(सं.), प्रेमचंद– स्त्री जीवन संबंधी कहानियाँ, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2012.
2. प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–1, इलाहाबाद, सुमित्र प्रकाशन, 2008.
3. प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–2, इलाहाबाद, सुमित्र प्रकाशन, 2008.
4. प्रेमचंद, मानसरोवर– भाग एक से आठ तक, नयी दिल्ली, स्टार पब्लिकेशनस, 2011.
5. विक्रमसिंह, मार्टिन. कता अहुर, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम, 2012.
6. विक्रमसिंह, मार्टिन. वहल्लु, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम, 2011.
7. विक्रमसिंह, मार्टिन. तोरागत केटि कता1, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम, 2012.
8. विक्रमसिंह, मार्टिन. पवुकारयाट गल् गॅसीम, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम, 2012.
9. विक्रमसिंह, मार्टिन. मगुल गेदर, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम, 2012.
10. विक्रमसिंह, मार्टिन. हदँ साक्कि कीम, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम, 2012.